विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -07 - 01- 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज सुन्दर हाथी नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे ।

सुन्दर हाथी

कल अध्ययन किए थे आज उसके आगे अध्ययन करेंगे।

शिकारियों के साथ घोड़े पर चले आ रहे हैं। वह फौरन एक बड़ी चट्टान की आड़ में छिप गया। धूप तेज थी, राजा साहब दम लेने के लिए घोड़े से उतरे। अचानक मोती आड़ से निकल पड़ा और गरजता हुआ राजा साहब की ओर दौड़ा। राजा साहब घबराकर भागे और एक छोटी झोंपड़ी में घुस गए। कुछ देर बाद मोती भी पहुंचा। उसने राजा साहब को अंदर घुसते हुए देख लिया था। पहले तो उसने अपनी सूंड से ऊपर का छप्पर गिरा दिया, फिर उसे पैरों से रौंदकर चूर-चूर कर डाला। भीतर राजा साहब का मारे डर के बुरा हाल था। जान बचने की कोई आशा न थी। आखिर जब कुछ न सूझा, तो वह जान पर खेलकर पीछे दीवार पर चढ़ गए और दूसरी तरफ कूदकर भाग निकले। मोती द्वार पर खड़ा छप्पर रौंद रहा था और सोच रहा था कि दीवार को गिराऊं या नहीं? आखिर उसने धक्का देकर दीवार गिरा दी। मट्टी की दीवार पागल हाथी का धक्का क्या सहती? मगर जब राजा साहब भीतर न मिले, तो उसने बाकी दीवारें भी गिरा दीं और जंगल की तरफ चला गया।

घर लौटकर राजा साहब ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो आदमी मोती को जीवित पकड़कर लाएगा, उसे एक हजार रुपया इनाम दिया जाएगा। कई आदमी इनाम के लालच से उसे पकड़ने के लिए जंगल में गए, मगर उनमें से एक भी न लौटा।

मोती के महावत के इकलौते लड़के का नाम था मुरली। अभी वह कुल आठ-नौ बरस का था, इसलिए राजा साहब दया करके उसे और उसकी मां को खाने-पहनने के लिए कुछ खर्च दिया करते

थे। मुरली था तो बालक, पर हम्मित का धनी था। वह कमर कसकर मोती को पकड़ लाने के लिए तैयार हो गया। मां ने बहुत समझाया और लोगों ने भी मना किया, मगर उसने किसी की एक न सुनी और जंगल की ओर चल दिया।

मोती इस आवाज को पहचानता था। वह वहीं रुक गया और सिर उठाकर ऊपर देखने लगा। मुरली को देखकर पहचान गया। यह वही मुरली था, जिसे वह अपनी सूंड से उठाकर अपने मस्तक पर बिठा लेता था। मैंने ही इसके बाप को मार डाला है।यह सोचकर उसे बालक पर दया आई। फिर खुश होकर सूंड हिलाने लगा।
मुरली उसके मन का भाव पहचान गया। वह पेड़ से नीचे उतरा और उसकी सूंड को थपकियां देने लगा। फिर उसे बैठने का इशारा किया। मोती बैठा नहीं, मुरली को अपनी सूंड से उठाकर पहले ही की तरह अपने मस्तक पर बिठा लिया और राजमहल की ओर चला। मुरली जब मोती को लिए हुए राजमहल के द्वार पर पहुंचा, तो किसी की हम्मित न होती थी कि मोती के पास जाए। मुरली ने कहा, ह्यडरो मत, मोती बल्किुल सीधा हो गया है, अब यह किसी को नहीं मारेगा।ह्ण
राजा साहब भी डरते-डरते मोती के सामने आए। उन्हें अचंभा हुआ कि पागल मोती अब गाय की तरह सीधा हो गया है।
उन्होंने मुरली को एक हजार रुपए इनाम में दिए और उसे अपना खास महावत बना लिया। मोती फिर राजा साहब का सबसे प्यारा हाथी बन गया।